



Mr.santosh



J

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121049501

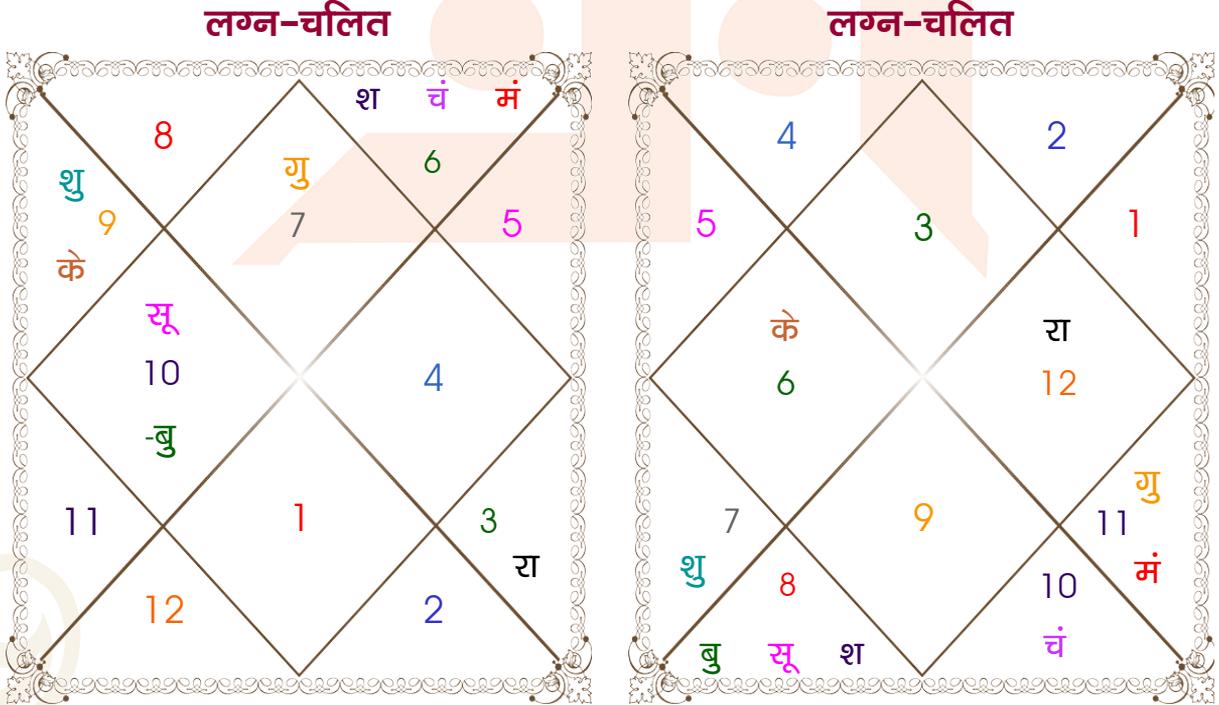
पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
11/02/1982 :	जन्म तिथि	: 06/12/1986
गुरुवार :	दिन	: शनिवार
घंटे 23:59:00 :	जन्म समय	: 19:15:00 घंटे
घटी 44:03:06 :	जन्म समय(घटी)	: 32:39:35 घटी
India :	देश	: India
Berhampur :	स्थान	: Koraput
19:21:00 उत्तर :	अक्षांश	: 18:48:00 उत्तर
84:51:00 पूर्व :	रेखांश	: 82:41:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे 00:09:24 :	स्थानिक संस्कार	: 00:00:44 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:21:45 :	सूर्योदय	: 06:18:49
17:48:08 :	सूर्यास्त	: 17:21:34
23:36:11 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:40:23
तुला :	लग्न	: मिथुन
शुक्र :	लग्न लग्नाधिपति	: बुध
कन्या :	राशि	: मकर
बुध :	राशि-स्वामी	: शनि
हस्त :	नक्षत्र	: धनिष्ठा
चन्द्र :	नक्षत्र स्वामी	: मंगल
1 :	चरण	: 2
धृति :	योग	: व्याघात
बालव :	करण	: तैतिल
पू-पुरुषोत्तम :	जन्म नामाक्षर	: गी-गीता
कुम्भ :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: धनु
वैश्य :	वर्ण	: वैश्य
मानव :	वश्य	: जलचर
महिष :	योनि	: सिंह
देव :	गण	: राक्षस
आद्य :	नाड़ी	: मध्य
मूषक :	वर्ग	: मार्जार

## ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 7वर्ष 11मा 29दि	26:01:23	तुला	लग्न	मिथु	17:37:06	मंगल 4वर्ष 5मा 17दि
गुरु	29:06:18	मक	सूर्य	वृश्चि	20:28:11	शनि
11/02/2015	12:40:08	कन्या	चंद्र	मक	28:09:45	25/05/2025
11/02/2031	25:05:34	कन्या	मंगल	कुंभ	13:27:00	24/05/2044
गुरु 31/03/2017	09:27:41	मक व	बुध	वृश्चि	01:34:16	शनि 27/05/2028
शनि 13/10/2019	16:28:55	तुला	गुरु	कुंभ	20:37:18	बुध 04/02/2031
बुध 18/01/2022	29:46:28	धनु	शुक्र	तुला	13:17:36	केतु 15/03/2032
केतु 24/12/2022	28:31:34	कन्या व	शनि	वृश्चि	18:45:30	शुक्र 16/05/2035
शुक्र 24/08/2025	28:28:46	मिथु व	राहु व	मीन	25:35:07	सूर्य 27/04/2036
सूर्य 13/06/2026	28:28:46	धनु व	केतु व	कन्या	25:35:07	चन्द्र 26/11/2037
चन्द्र 13/10/2027	10:43:02	वृश्चि	हर्ष	वृश्चि	28:23:26	मंगल 05/01/2039
मंगल 18/09/2028	02:51:55	धनु	नेप	धनु	11:03:54	राहु 11/11/2041
राहु 11/02/2031	03:16:32	तुला व	प्लूटो	तुला	15:01:48	गुरु 24/05/2044

व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

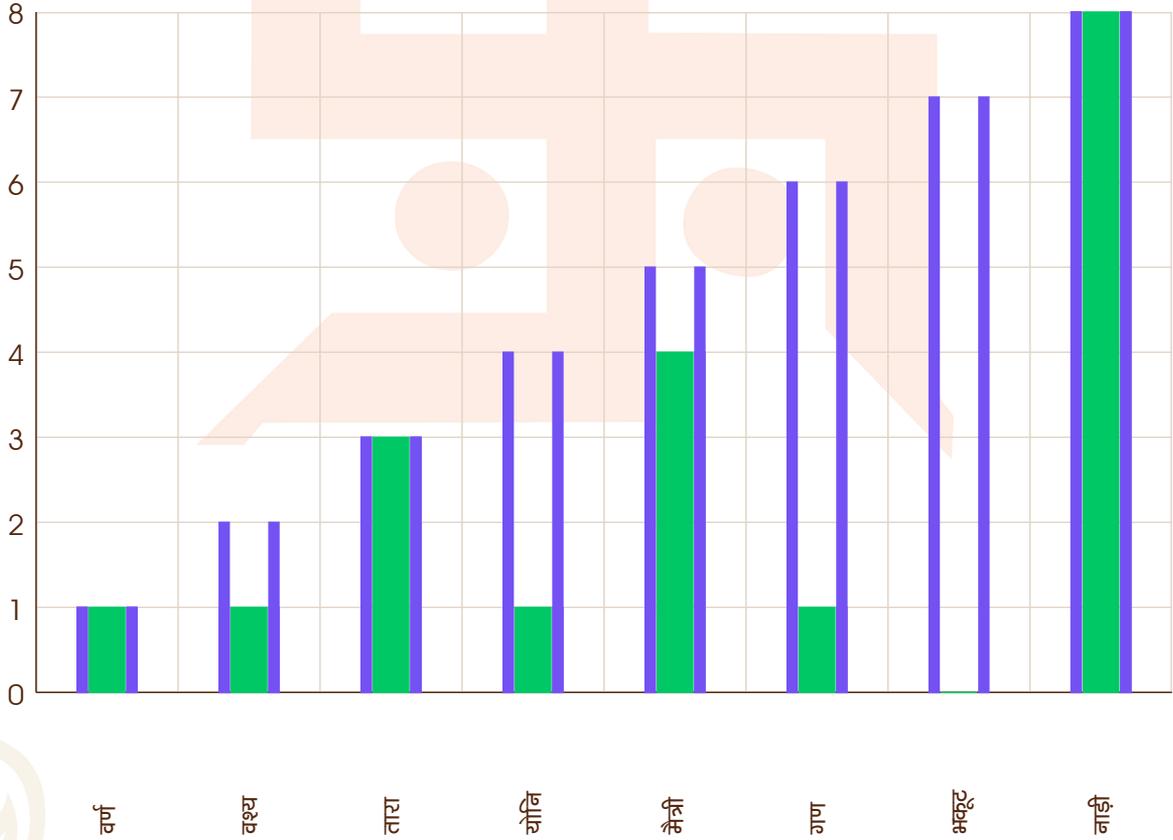
23:36:11 चित्रपक्षीय अयनांश 23:40:23



## अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	महिष	सिंह	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शनि	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाडी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
<b>कुल :</b>			<b>36</b>	<b>19.00</b>		

कुल : 19 / 36



## अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

Mr.santosh का वर्ग मूषक है तथा J का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.santosh और J का मिलान औसत है।

### मंगलीक दोष मिलान

Mr.santosh मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

**व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना ।**

**द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना ।।**

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr.santosh कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।**

**न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र Mr.santosh कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

J मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

**त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः ।**

**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।**

वर या कन्या की कुण्डली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुण्डली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि J कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.santosh तथा J में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है।



## अष्टकूट फलादेश

### वर्ण

Mr.santosh का वर्ण वैश्य है तथा J का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण Mr.santosh और J दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रुपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। Mr.santosh और J दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

### वश्य

Mr.santosh का वश्य द्विपद अर्थात् मनुष्य है एवं J का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलिये Mr.santosh एवं J दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः Mr.santosh J पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि Mr.santosh हमेशा J के ऊपर हावी रहेगा।

### तारा

Mr.santosh की तारा अतिमित्र तथा J की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। Mr.santosh हमेशा J के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

### योनि

Mr.santosh की योनि महिष है तथा J की योनि सिंह है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी-कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि

होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

### मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr.santosh का राशि स्वामी J के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि J का राशिस्वामी Mr.santosh के राशिस्वामी के साथ मित्रता का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए सम हों किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को अपना मित्र मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

### गण

Mr.santosh का गण देव तथा J का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में J निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। J की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

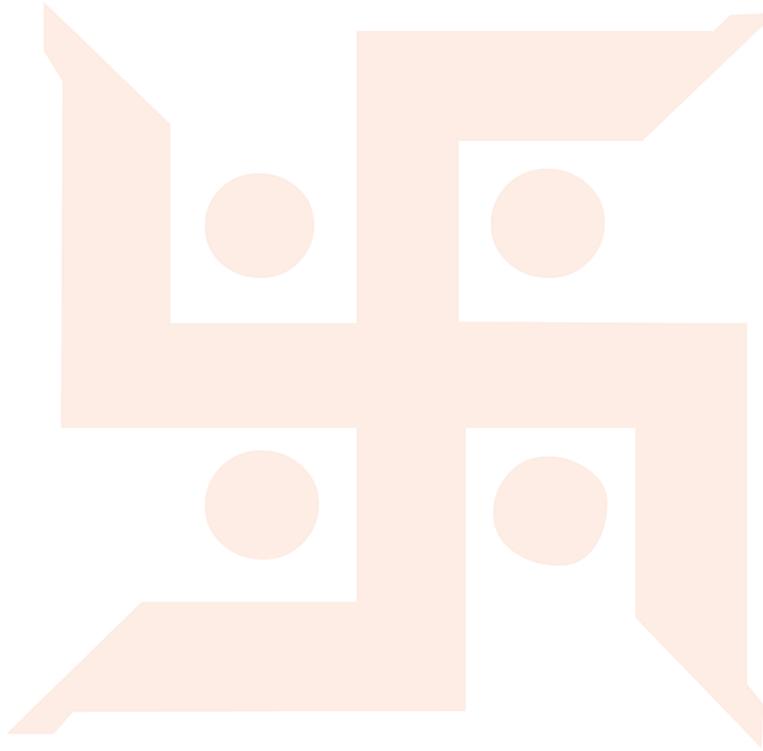
### भकूट

Mr.santosh से J की राशि पंचम भाव में स्थित है तथा J से Mr.santosh की राशि नवम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। दोनों के राशि स्वामियों में परस्पर मित्र होने के कारण नवम-पंचम दोष का परिहार होने के कारण विवाह को स्वीकृति प्रदान की जा सकती है किंतु भकूट मिलान में इसे 0 अंक/गुण प्रदान किया जायेगा। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े होते रह सकते हैं। जिसके कारण J को संतानोत्पत्ति में भी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

### नाड़ी

Mr.santosh की नाड़ी आद्य है तथा J की नाड़ी मध्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात् यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का मिलान अति उत्तम माना जाता है क्योंकि इसमें

जीवन के तीन आवश्यक घटकों में से दो वात एवं पित्त का समन्वय है। जीवन के अस्तित्व के लिए वात एवं पित्त का समन्वय आवश्यक है। जिसके कारण आपकी संतान काफी बुद्धिमान, स्वस्थ, मानसिक रूप से दृढ़ एवं सौभाग्यशाली होंगी। जो भौतिकवादी विश्व में सुविधा संपन्न जीवन जीने के लिए आवश्यक है।



## मेलापक फलित

### स्वभाव

Mr.santosh की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा J की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर है। अतः दोनों का पृथ्वी तत्व होने के कारण स्वभावगत समानताएं रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा फलतः मिलान उत्तम रहेगा ।

Mr.santosh की राशि का स्वामी बुध तथा J की राशि का स्वामी शनि दोनों परस्पर मित्र तथा सम राशि में स्थित है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी। इसके प्रभाव से Mr.santosh और J का परस्पर प्रेम सहयोग तथा समर्पण का भाव होगा तथा एक दूसरे के सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखकर अपनी सहृदयता का परिचय देंगे। साथ ही परस्पर समर्पण का भाव भी विद्यमान होगा। जिससे वैवाहिक जीवन की शुभता बनी रहेगी।

Mr.santosh और J की राशियां परस्पर पंचम नवम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार इसे भकूट दोष माना गया है। इसके प्रभाव से यदा कदा Mr.santosh और J के मध्य अनावश्यक मतभेद एवं विवाद उत्पन्न होंगे तथा अहंकार के भाव की प्रबलता के कारण संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। अतः यदि Mr.santosh और J परस्पर सामंजस्य का भाव बनाएं रखें तथा अभिमानी प्रवृत्तियों का त्याग करें तो जीवन सुखमय हो सकता है।

Mr.santosh का वश्य मानव एवं J का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक शत्रुता तथा विषमता का भाव विद्यमान रहता है। अतः Mr.santosh और J की अभिरुचियों में असमानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर भी आवश्यकताएं अलग अलग होगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

Mr.santosh और J दोनों का वर्ण वैश्य है। अतः दोनों की कार्य क्षमता समान रहेगी तथा धनार्जन के प्रति रुचिशील रहेंगे। साथ ही अपने समस्त कार्यों को वणिक बुद्धि से सम्पन्न करेंगे।

### धन

Mr.santosh की तारा अतिमित्र तथा J की तारा सम्पत है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट का प्रभाव भी सम होगा तथा कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा। लेकिन मंगल का अशुभ प्रभाव Mr.santosh की आर्थिक स्थिति पर रहेगा परन्तु कुल स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा तथा Mr.santosh और J समृद्धि से युक्त होकर जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

J भाग्यशाली तथा धनाढ्य होंगी तथा Mr.santosh के शुभ प्रभाव से अपने धन एवं वैभव की अभिवृद्धि करने में समर्थ होंगी लेकिन मंगल के प्रभाव से Mr.santosh यदा कदा मुक्त

हाथों से व्यय करेंगे। अतः Mr.santosh को अपनी ऐसी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखना चाहिए।

### स्वास्थ्य

Mr.santosh का आद्य तथा J की मध्य नाड़ी में जन्म हुआ है। अतः नाड़ी दोष का इन पर कोई प्रभाव नहीं होगा लेकिन मंगल के दुष्प्रभाव से J को समय समय पर स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से साथ ही गुप्त रोग या अन्य रक्त अथवा पित्त संबंधी परेशानियां समय समय पर उत्पन्न होंगी। इसके अतिरिक्त मासिक धर्म की अनियमितता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए J को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए।

### संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mr.santosh और J का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mr.santosh और J के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में J के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन J को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में J को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mr.santosh और J सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमत्ता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mr.santosh और J का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

### ससुराल-सुश्री

J के अपनी सास से संबंधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ से J किसी भी अनावश्यक समस्या या असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। J के हृदय में उनके प्रति सेवा भाव रहेगा तथा अपनी सेवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्यपि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा सामान्यतया संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके ससुर से J को विशेष स्नेह सम्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी तथा के द्वारा J को समय समय पर समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों से J के अत्यंत ही स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण संबंध रहेंगे तथा उनसे इन्हें पूर्ण

सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही परस्पर संबंधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी समस्याओं तथा सुख दुख में एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इस प्रकार J के सास ससुर का दृष्टिकोण सामान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

### ससुराल-श्री

Mr.santosh के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Mr.santosh अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Mr.santosh के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Mr.santosh के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।